अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

**155वें मर्यादा महोत्सव के लिए महातपस्वी महाश्रमण का भव्य ऐतिहासिक मंगल प्रवेश**

**-मनमोहक, विशाल और विरोट जुलूस के साथ महातपस्वी ने किया तीन किलोमीटर का विहार**

**-कोयम्बत्तूर में छाया अलौकिक दृश्य, जयकारों से गुंजायमान हो उठा समूचा वातावरण**

**-शुभ मुहूर्त में आचार्यश्री ने तेरापंथ भवन में किया पावन प्रवेश**

**-धर्म है सबसे उत्कृष्ट मंगलः शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण**

**08.02.2019 ए.के.एस नगर, पोनियाह राजपुरम, कोयम्बत्तूर (तमिलनाडु):** दक्षिण भारत की धरती पर प्रथम मर्यादा महोत्सव और तेरापंथ धर्मसंघ के 155वें मर्यादा महोत्सव हेतु शुक्रवार को जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें देदीप्यमान महासूर्य महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने शुक्रवार को लुणिया कुंज से मंगल प्रस्थान किया। आज तो मानों पूरा कोयम्बत्तूर नगर ही एक अलौकिक वातावरण से आच्छादित नजर आ रहा था। चारों ओर उल्लास, उत्साह, उमंग छाया हुआ था। आचार्यश्री के कुछ कि.मी. का विहार करते ही अपने-अपने संगठनों के और संस्थाओं के गणवेश में सजे-धजे महिला, पुरुष, बच्चे, युवा पंक्तिबद्ध खड़े थे। वहीं अनेकानेक विद्यालयों के सैंकड़ों विद्यार्थी व एन.एसी.एसी. के छात्र भी आचार्यश्री के स्वागतार्थ उपस्थित थे। वहीं पंक्तिबद्ध साधु-साध्वियां और समणश्रेणी भी आचार्यश्री के आसपास गुजर रही थी। ऐसा अनुशासनात्मक और मर्यादित जुलूस शायद कोयम्बत्तूरवासी पहली बार देख रहे थे। इन सबके बीच महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी गतिमान थे। भव्य, विशाल, विराट और मर्यादित जुलूस के जयघोषों से पूरा वातावरण गुंजायमान हो रहा था।

लगभग तीन किलोमीटर का विहार कर विशाल जुलूस के साथ आचार्यश्री ससंघ ए.के.एस नगर, पोनियाह राजपुरम स्थित तेरापंथ भवन पधारे। मंगल मुहूर्त में आचार्यश्री ने 155वें मर्यादा महोत्सव हेतु मंगल प्रवेश किया। भवन से कुछ ही दूरी पर स्थित गांधी पार्क में बने भव्य प्रवचन पंडाल में आयोजित कार्यक्रम में कोयम्बत्तूर महिला मण्डल व कन्या मण्डल ने पृथक-पृथक गीतों के माध्यम से आचार्यश्री की अभिवन्दना की।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने लोगों को उत्प्रेरित करते हुए कहा कि मर्यादा महोत्सव के कोयम्बत्तूर में आचार्यश्री के पदार्पण का लाभ यहां की जनता उठाए और अपने जीवन को विशेष आलोक से भावित करे।

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी ने उपस्थित जनमेदिनी को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि मनुष्य मंगल की कामना करता है। आदमी मंगल के लिए मंगल मुहूर्त देखता है, कई प्रकार के प्रयोग भी मंगल के लिए किए जाते हैं। लोगों द्वारा एक-दूसरे को मंगलकामना भी दी जाती है। धर्म को सबसे बड़ा और उत्कृष्ट मंगल बताया गया है। धर्म से बड़ा कोई मंगल नहीं होता। अहिंसा, संयम और तप को धर्म बताया गया है। आदमी को सभी प्राणियों को अपने समान समझना चाहिए। आदमी को किसी भी प्रकार की हिंसा से बचने का प्रयास करना चाहिए। जहां अहिंसा होती है, वहां मंगल होता है। अहिंसा भगवती है, शरण है, त्राण है। जहां अहिंसा है, मानों वहां धर्म का एक आयाम आ जाता है। आदमी को संयम करने का प्रयास करना चाहिए। आदमी अपने शरीर, वाणी और मन पर संयम करे। आदमी को गुस्से को असफल करने का प्रयास करना चाहिए। संयम है तो जीवन में मंगल की कामना की जा सकती है। तपस्या के क्षेत्र में भी आदमी को प्रयास करना चाहिए। यथानुकूलता तपस्या के द्वारा आदमी अपने पूर्वकृत कर्मों को काट सकता है। तप है तो माना चाहिए कि जीवन में मंगल है।

आचार्यश्री ने मर्यादा महोत्सव के प्रवेश के संदर्भ में मंगल संदेश प्रदान किया। आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के पश्चात् मुनि नम्रकुमारजी ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। कोयम्बत्तूर टीपीएफ के अध्यक्ष श्री हिमांशु मरोठी, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री अजय बुच्चा, तेरापंथ ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुरेश डूंगरवाल, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री निर्मल रांका, आचार्य महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री विनोद लुणिया, उपासक श्री शांतिलाल बोहरा व मर्यादा महोत्सव के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री महावीर भण्डारी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी और आचार्यश्री से पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति के माध्यम से अपनी भावांजलि श्रीचरणों में अर्पित की।